स्वच्छ भारत, स्वच्छ विद्यालय अभियान

गांधी तेरे पथ पर

गांधी की क्या बात करूँ, गांधी उदास हैं,
वे जूझ रहे तुमसे और बद-हवास हैं।

गंदगी ही गंदगी बाप रे, कूड़े का ढेर है,
ये भी कोई रोग, या ऊपर का खेल है।

गंदी गलियाँ और नाले सता रहे हैं,
खा-खा के पान थूकने वाले गंदगी फैला रहे हैं।

चुप हैं, व्यंग्य में, थोड़े तंग गांधी हैं।
अब उनके रास्तों से थोड़ा दंग आदमी है।

जिससे भी मिले गांधी, आदर से मिले हैं,
दौड़कर ज्ञान के सागर से मिले हैं।

घर-घर में जा रहा एक ही संदेश है,
ये हमारा देश, हमारे पूर्वज की देन है,
इसे साफ़ रखना हमारा कर्तव्य है,
आखिर ये तो अपना ही प्रिय, एक ही तो देश है।

गांधी तेरे कदमों पर
आ चलें हम झुका के सर।

गाँव-गाँव में, विद्यालयों में स्वच्छ शौचालय हैं,
सेहत और तंदुरुस्ती के सब रखवाले हैं,
उसके आस-पास ही कहीं अपने सपनों का विद्यालय है।

दूर उस गाँव में देख,
एक नन्ही परी के सपने हैं,
उसका भी मन का महल विद्यालय से ही तो है।

गांधी तेरे कदमों पर
आ चले हम झुका के सर।

हर मोह का, माया का और दर्द का
हमने इलाज पाया है।

आ चलें हम स्वच्छता फैलाएँ
आखिर ये वही तो भारत है, जिससे हमने दिल लगाया है।

–Tanessa Puri

1 सत्कर्तव्य

पठन से पूर्व

समूची प्रकृति कर्म करने में जुटी है। पशु-पक्षी और मानव तो कर्म करते स्पष्ट दिखाई देते हैं। पेड़-पौधे निरंतर धरती से खनिज पदार्थ सोख रहे हैं। हमें फल, फूल और खाद्यान्न दे रहे हैं। नदियाँ जल को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में जुटी हैं और बादल वर्षा करने के प्रयास में रत हैं। इस प्रकार जीवित प्राणी और अचर प्रकृति परोपकार में जुटी है। इसलिए इनके कर्म को सत्कर्म कहा गया है।

पाठ-परिचय

इस संसार के सारे जीव समुदाय, यहाँ तक कि जड़ पदार्थ भी अपने-अपने कार्य में जुटे हुए हैं। तुच्छ से तुच्छ पदार्थ भी निष्क्रिय नहीं हैं। फिर मनुष्य अपने कर्म से विमुख क्यों हो? कवि रामनरेश त्रिपाठी इसी तथ्य के आलोक में कहते हैं कि मनुष्य को भी अपना सत्कर्तव्य पहचानना चाहिए और उसी के अनुरूप आचरण करना चाहिए।

चर्चा करें

बच्चों से चर्चा करें कि हमें फल-फूल, सब्ज़ी और अन्न प्रकृति के कर्म में जुटे होने से मिलते हैं। यदि पेड़-पौधे कर्म न करें तो हम कैसे जीवित रह पाएँगे? इसी प्रकार नदियों के बिना जल नहीं मिलेगा और पशु यदि कर्म न करें तो हमें दूध, घी, दही, पनीर कुछ भी नहीं मिलेगा। बच्चों से पूछें कि हमें कौन-कौन से कर्तव्य पूरे करने चाहिए। बच्चों को विद्यार्थी जीवन का कर्तव्य पूरा करने की प्रेरणा दें।

जग में सचर-अचर जितने हैं, सारे कर्म निरत हैं।
धुन है एक-न-एक सभी को, सबके निश्चित व्रत हैं।

जीवन भर आतप सह वसुधा पर छाया करता है।
तुच्छ पत्र की भी स्वकर्म में कैसी तत्परता है।।

रवि जग में शोभा सरसाता, सोम सुधा बरसाता।
सब हैं लगे कर्म में, कोई निष्क्रिय दृष्टि न आता।

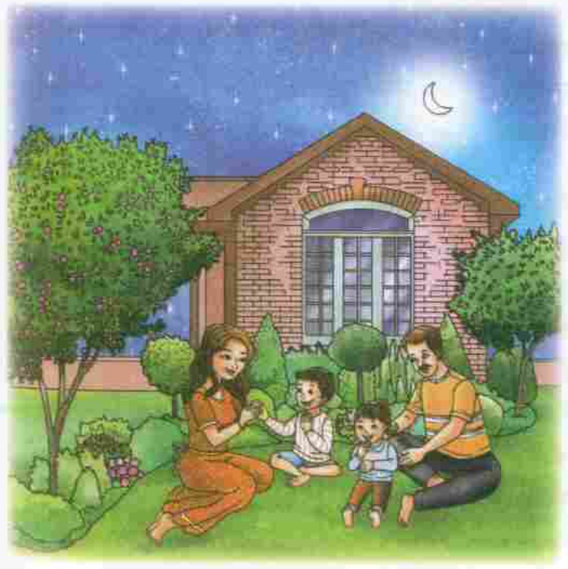

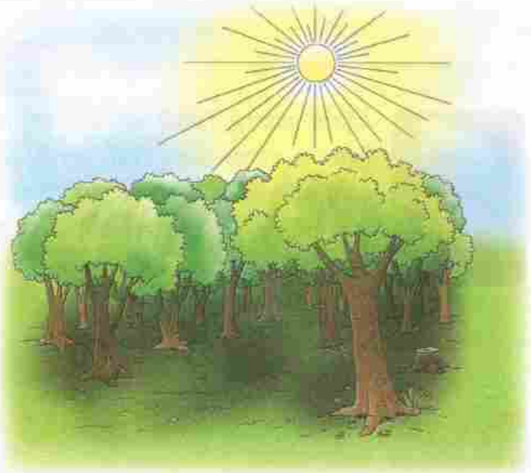

है उद्देश्य नितांत तुच्छ तृण के भी लघु जीवन का।
उसी पूर्ति में वह करता है अंत कर्ममय तन का।।

तुम मनुष्य हो, अमित बुद्धि-बल-विलसित जन्म तुम्हारा।
क्या उद्देश्य रहित हो जग में, तुमने कभी विचारा?

मौखिक प्रश्न

1. कर्म में कौन-कौन लगे हुए हैं?
2. इस संसार में सूर्य और चंद्रमा अपनी किस भूमिका का निर्वाह करते हैं?
3. कवि मनुष्य से कौन-सा प्रश्न पूछ रहा है?

बुरा न मानो, एक बार सोचो तुम अपने मन में।
क्या कर्तव्य समाप्त कर लिया तुमने निज जीवन में?

केवल अपने लिए सोचते, मौज भरे गाते हो।
पीते, खोते, सोते, जगते, हँसते, सुख पाते हो।

जग से दूर स्वार्थ-साधन ही सतत तुम्हारा यश है।
सोचो तुम्हीं, कौन अग-जग में तुम-सा स्वार्थ विवश है?

पैदा कर जिस देशजाति ने तुमको पाला-पोसा।
किए हुए है वह निज-हित का तुमसे बड़ा भरोसा।

उससे होना उऋण प्रथम है सत्कर्तव्य तुम्हारा।
फिर दे सकते हो वसुधा को शेष स्वजीवन सारा।।

–रामनरेश त्रिपाठी

मौखिक प्रश्न

1. मनुष्य केवल अपने लिए क्या-क्या करता है?
2. कवि मनुष्य से किस विषय में सोचने के लिए कह रहा है?
3. यह कविता मनुष्य को कैसा जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है?

कवि-परिचय

कविवर रामनरेश त्रिपाठी का जन्म सन् 1881 में कोइरीपुर, ज़िला जौनपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। आरंभिक शिक्षा के पश्चात उन्होंने हिंदी, अंग्रेज़ी, बँगला और उर्दू का ज्ञान प्राप्त किया। हिंदी में इन्होंने बाल साहित्य की रचना की और बाल-पत्रिका 'वानर' का संपादन किया। साथ ही नाटक, उपन्यास, आलोचना, संस्मरण आदि अन्य विधाओं में भी रचनाएँ कीं। इनकी रचनाओं में देशप्रेम की मुखर अभिव्यक्ति हुई है। कवि की मृत्यु सन् 1962 में हुई। मिलन, पथिक, स्वप्न (खंड काव्य), मानसी (कविता संग्रह) आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

- **जग** = संसार (world)
- **सचर** = चेतन, गतिमान (living, movable)
- **अचर** = जड़, गतिमान (non-living)
- **कर्म निरत** = कर्म में लगे हुए (engaged in work)
- **धुन** = लगन, किसी एक कार्य में लगे रहने की प्रवृत्ति (craze, ardent desire)
- **व्रत** = प्रतिज्ञा, कार्य पूरा करने की शपथ (vow)
- **आतप** = धूप, गरमी (sunlight)
- **वसुधा** = धरती, पृथ्वी (earth)
- **तुच्छ** = छोटा, क्षुद्र (negligible)
- **स्वकर्म** = अपना काम (own work)
- **तत्परता** = मुस्तैदी, कार्य विशेष में लगे रहने का भाव (readiness, eagerness)
- **सोम** = चंद्रमा (moon)
- **सुधा** = अमृत (nectar)
- **निष्क्रिय** = कोई काम-धाम न करने वाला, क्रियारहित (inactive)
- **नितांत** = बिल्कुल, एकदम (absolute)
- **तृण** = तिनका (grass, twig)
- **अमित** = सीमाहीन, अत्यधिक (endless, unlimited)
- **विलसित** = शोभित, वैभवयुक्त (prosperous)
- **सतत** = लगातार (continuous)
- **निज-हित** = अपना हित (self-welfare)
- **उऋण** = ऋण से मुक्त (free from debt or loan)
- **स्वजीवन** = अपना जीवन (one's life)

अभ्यास

पाठ से प्रश्न — Comprehension based on Lesson

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) जग में जितने भी सचर-अचर हैं, कवि ने उनकी किस विशेषता का वर्णन किया है?

(ख) तुच्छ पत्र भी अपने कर्म में किस प्रकार तत्पर है?

(ग) कवि ने मनुष्य को किन गुणों से युक्त बताया है?

(घ) स्वार्थ-साधन में कौन लगा हुआ है? यह उचित क्यों नहीं है?

(ङ) देशजाति ने हम पर कैसे उपकार किए हैं?

(च) मनुष्य का सत्कर्तव्य क्या है?

(छ) अपने देश को महान बनाने के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं?

2. आशय स्पष्ट कीजिए।

(क) है उद्देश्य नितांत तुच्छ तृण के भी लघु जीवन का।
उसी पूर्ति में वह करता है अंत कर्ममय तन का।।

(ख) जग से दूर स्वार्थ-साधन ही सतत तुम्हारा यश है।
सोचो तुम्हीं, कौन अग-जग में तुम-सा स्वार्थ विवश है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए।

(क) तुच्छ पत्र की किसमें तत्परता है?
(*i*) भोजन-ग्रहण में (*ii*) अपने कर्म में
(*iii*) वायु में (*iv*) शोभा बढ़ाने में

(ख) जग में शोभा कौन सरसाता है?
(*i*) रवि (*ii*) कमल
(*iii*) मोर (*iv*) तोता

(ग) असीम बुद्धि-बल किसे प्राप्त है?
(*i*) हाथी को (*ii*) शूरवीर को
(*iii*) सिंह को (*iv*) मनुष्य को

(घ) मनुष्य लगातार किसमें यश ढूँढ़ रहा है?
(*i*) उत्तम भोजन में (*ii*) परोपकार में
(*iii*) स्वार्थ-सिद्धि में (*iv*) उच्च पद में

(ङ) हमारा पहला कर्तव्य किसके ऋण से मुक्त होना है?
(*i*) देश जाति के (*ii*) महाजन के
(*iii*) सरकार के (*iv*) माता-पिता के

शब्द-कौशल — Vocabulary

1. विलोम शब्द लिखिए।

सचर ×		लघु ×	
निश्चित ×		स्वार्थ ×	
निष्क्रिय ×		यश ×	

2. जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं। जैसे–

जल = पानी, जल जाना
लाल = लाल रंग, बेटा
कर = हाथ, किरण, टैक्स

अब आप नीचे दिए गए शब्दों के अनेक अर्थ पता कीजिए और प्रत्येक के कम से कम दो-दो अर्थ लिखिए।

जग, पत्र, सोम, मन, शेष।

3. दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

वसुधा, रवि, सुधा, मनुष्य, लघु

भाषा-कौशल — Language Skills

1. नीचे लिखे शब्दों पर ध्यान दीजिए।

कर्म, कर्तव्य, स्वार्थ, पूर्ति

इन सभी शब्दों में समानता यह है कि सब में रेफ़ (र्) का प्रयोग हुआ है। जब 'र' किसी व्यंजन से पहले आए तो, वह आगे आने वाले व्यंजन पर रेफ़ (र्) के रूप में लगता है। यहाँ स्वर रहित 'र्' होता है। जैसे–

र् + म = र्म (कर्म)
र् + त = र्त (कर्तव्य, पूर्ति)
र् + थ = र्थ (स्वार्थ)

आप ऐसे दस शब्द लिखिए जिसमें रेफ़ (र्) का प्रयोग हुआ हो।

2. आपने संज्ञा के बारे में पढ़ा होगा। किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को **संज्ञा** कहते हैं। जैसे–

नीरज, अनुराधा, तोता, कलम, मुंबई, श्रीनगर, सुंदरता आदि।

संज्ञा के तीन भेद होते हैं–

(*i*) व्यक्तिवाचक संज्ञा : ये व्यक्ति वस्तु या स्थान विशेष का बोध कराते हैं। जैसे– महात्मा गांधी, हिमालय, ताजमहल आदि।

(*ii*) जातिवाचक संज्ञा : इनसे व्यक्ति, वस्तु या स्थान की पूरी जाति का बोध होता है। जैसे– लोमड़ी, आम, चींटी, कागज़ आदि।

(*iii*) भाववाचक संज्ञा : इनसे वस्तु, व्यक्ति, प्राणी आदि के स्वभाव, दशा, गुण-दोष और भाव आदि का पता चलता है। जैसे– मिठास, नीचता, बचपन, यौवन, थकावट आदि।

नीचे लिखे संज्ञा शब्दों के भेद लिखिए।

वसुधा, तृण, मनुष्य, कर्तव्य, रवि, जीवन, यश, देश जग, भारत।

रचनात्मक अभिव्यक्ति Creative Activity

मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह सबसे पहले अपना हित देखता है। लेकिन स्वहित जब इतना गहरा या प्रगाढ़ हो जाए कि उससे दूसरों का हित गौण होने लगे तो यह स्वार्थ का रूप ले लेता है। स्वार्थ में व्यक्ति अंधा हो जाता है, उसे अच्छे-बुरे की पहचान नहीं होती। इसलिए महापुरुष हमें सलाह देते हैं कि हमें परोपकारी बनना चाहिए।

आप परोपकार के कौन-कौन से कार्य करना चाहेंगे? इस पर एक लघु अनुच्छेद लिखिए।

खेल-खेल में Fun Time

देश जाति के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य करने वाले तथा अपने कर्तव्यों का भली-भाँति निर्वाह करने वाले कुछ महापुरुषों के चित्र एकत्रित करके अपनी स्क्रैपबुक में चिपकाइए तथा उनके विषय में कुछ प्रमुख बातों की जानकारी प्राप्त कीजिए।

श्रवण-कौशल का विकास Listening Skills

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को ऑनलाइन सहायता के अंतर्गत दी गई कविता 'हम कुछ कर दिखलाएँगे' सुनाएँ और निम्नलिखित प्रश्न पूछें–

1. इस कविता में बच्चे क्या प्रण कर रहे हैं?
2. किन लोगों को गले लगाने की बात की जा रही है?
3. बच्चे किसमें उत्साह जगाएँगे?
4. 'उद्यम का दीप जलाएँगे' से क्या तात्पर्य है?
5. इस कविता से आपको क्या सीख मिल रही है?

वाचन-कौशल का विकास Speaking Skills

बच्चो! जैसा कि इस पाठ में बताया गया है कि इस संसार के सारे जड़-चेतन अपने-अपने कर्म में जुटे हुए हैं। मनुष्य होने के नाते भी कुछ कर्म हैं जिनका हमें भली-भाँति निर्वाह करना है। आप अपने कर्तव्यों के बारे में अपने साथियों से चर्चा कीजिए।

जीवन-कौशल Life Skills

कवि ने तिनके, पत्ते, सूर्य, चंद्रमा आदि का उदाहरण देकर यह सिद्ध किया है कि इस संसार में सभी कर्मरत हैं। इन सबने अपना-अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया है। लेकिन बहुत से मनुष्य ऐसे हैं जिन्हें न तो जीवन का उद्देश्य मालूम है और न ही कर्तव्य। फिर तो वह भटकेगा ही। कवि ने इसी बात पर विचार करने के लिए कहा है। आप भी इस बात पर विचार कीजिए कि उद्देश्यहीन जीवन से क्या-क्या हानियाँ हो सकती हैं। फिर अपना एक मत भी बनाइए।

अभिवृत्ति एवं जीवन-मूल्य Attitude & Values

बच्चो! प्रत्येक व्यक्ति देश और समाज में ही पलता-बढ़ता है। वहीं इसका जन्म, पालन-पोषण और मृत्यु होती है। इसलिए हमें अपनी जन्मभूमि का उपकार नहीं भूलना चाहिए। देश अपने निवासियों से कई प्रकार की अपेक्षाएँ रखता है, उन्हें पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति में संलग्न रहते हुए भी देश के प्रति अपने कर्तव्य को याद रखना चाहिए। देश की सेवा वास्तव में मानवता की ही सेवा है।